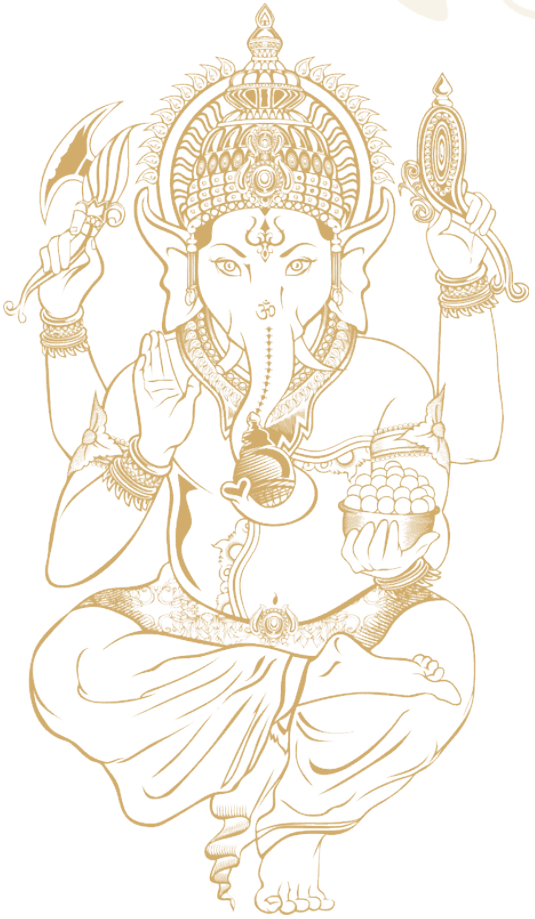

# Simaran jain

21 Sep 1997

10:20 PM

Gwalior

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121629901

**तिथि** 21/09/1997 **समय** 22:20:00 **वार** रविवार **स्थान** Gwalior **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:27
**अक्षांश** 26:12:00 उत्तर **रेखांश** 78:09:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:17:24 घंटे

### पंचांग

| | |
|---|---|
| साम्पातिक काल | 22:05:00 घं |
| वेलान्तर | 00:06:51 घं |
| सूर्योदय | 06:05:31 घं |
| सूर्यास्त | 18:15:04 घं |
| चैत्रादि संवत | 2054 |
| शक संवत | 1919 |
| मास | आश्विन |
| पक्ष | कृष्ण |
| तिथि | 6 |
| नक्षत्र | रोहिणी |
| योग | वज्र |
| करण | वणिज |

### अवकहड़ा चक्र

| | |
|---|---|
| गण | मनुष्य |
| योनि | सर्प |
| नाड़ी | अन्त्य |
| वर्ण | वैश्य |
| वश्य | चतुष्पाद |
| वर्ग | गरूड़ |
| युँजा | पूर्व |
| हंसक | भूमि |
| जन्म नामाक्षर | ओ-ओमवती |
| पाया(रा.-न.) | स्वर्ण-स्वर्ण |
| होरा | बुध |
| चौघड़िया | चर |

### विंशोत्तरी

**चन्द्र 8वर्ष 5मा 25दि**

**राहु**

**18/03/2013**
**18/03/2031**

| | |
|---|---|
| राहु | 29/11/2015 |
| गुरु | 23/04/2018 |
| शनि | 27/02/2021 |
| बुध | 17/09/2023 |
| केतु | 04/10/2024 |
| शुक्र | 05/10/2027 |
| सूर्य | 29/08/2028 |
| चन्द्र | 28/02/2030 |
| मंगल | 18/03/2031 |

### योगिनी

**सिद्धा 5वर्ष 11मा 8दि**

**भद्रिका**

**31/08/2021**
**31/08/2026**

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 11/05/2022 |
| उल्का | 12/03/2023 |
| सिद्धा | 01/03/2024 |
| संकटा | 10/04/2025 |
| मंगला | 31/05/2025 |
| पिंगला | 10/09/2025 |
| धान्या | 09/02/2026 |
| भ्रामरी | 31/08/2026 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 20:31:36 | वृष | रोहिणी | 4 | चंद्र | शुक्र | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 04:54:30 | कन्या | उ०फाल्गुनी | 3 | सूर्य | शनि | सम राशि | 1.33 | ज्ञाति | पितृ | अतिमित्र |
| चंद्र | | | 12:01:09 | वृष | रोहिणी | 1 | चंद्र | राहु | मूलत्रिकोण | 1.40 | पुत्र | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 01:10:18 | वृश्चि | विशाखा | 4 | गुरु | मंगल | स्वराशि | 1.32 | कलत्र | भ्रातृ | क्षेम |
| बुध | | | 18:18:51 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 2 | शुक्र | राहु | मित्र राशि | 1.28 | भ्रातृ | ज्ञाति | मित्र |
| गुरु | व | | 18:43:00 | मक | श्रवण | 3 | चंद्र | बुध | नीच राशि | 0.86 | अमात्य | धन | जन्म |
| शुक्र | | | 17:17:03 | तुला | स्वाति | 4 | राहु | शुक्र | मूलत्रिकोण | 1.13 | मातृ | कलत्र | विपत |
| शनि | व | | 24:29:56 | मीन | रेवती | 3 | बुध | राहु | सम राशि | 1.19 | आत्मा | आयु | साधक |
| राहु | व | | 25:52:25 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 4 | शुक्र | बुध | शत्रु राशि | | --- | ज्ञान | मित्र |
| केतु | व | | 25:52:25 | कुंभ | पू०भाद्रपद | 2 | गुरु | केतु | शत्रु राशि | | --- | मोक्ष | क्षेम |

## लग्न-चलित

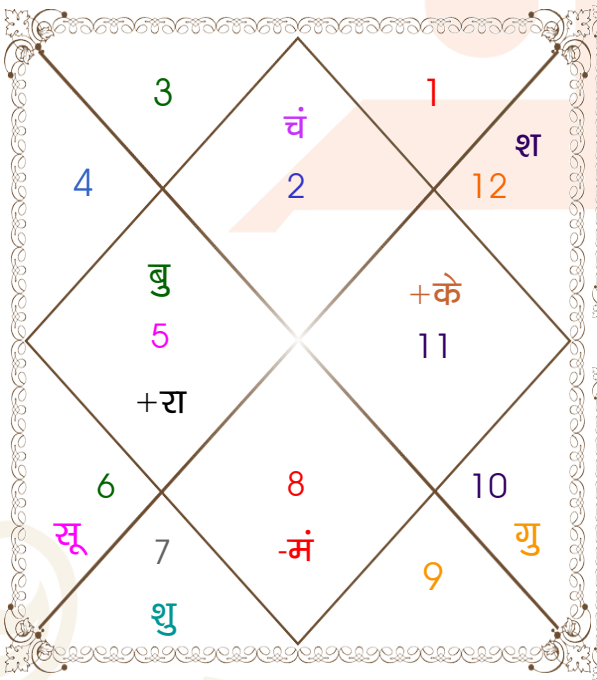


## चन्द्र कुंडली

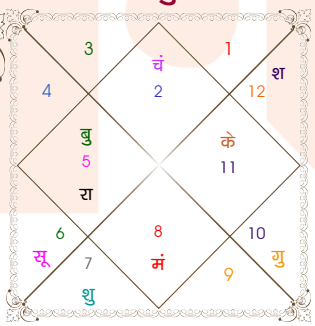


## नवमांश कुंडली

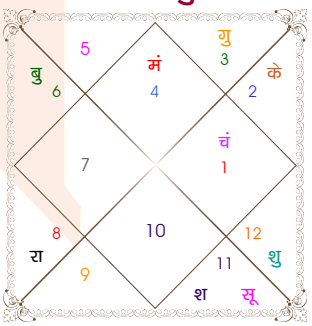


## सर्वाष्टकवर्ग

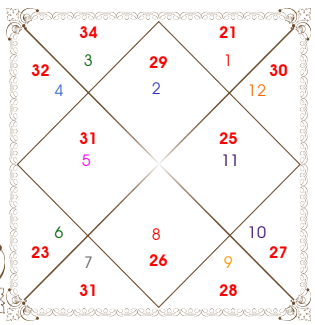


## दशमांश कुंडली

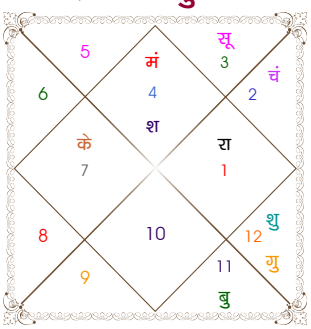


**Pulak Sagarm**
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

# नक्षत्रफल

आप रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि सर्प, गण मनुष्य, वर्ण वैश्य, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग गरूड़ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम ओ अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा- ओमवती।

आप आस्तिक प्रवृति की महिला होंगी तथा भगवान पर आपकी पूर्ण आस्था होगी। सारे धर्म संम्बधी कार्यों की आपको जानकारी होगी तथा नियम पूर्वक उन कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सरल एवं सुन्दर होंगी। बोलने में अति चतुर होंगी। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने में आप दक्ष होंगी। आप बुद्धिमती होंगी तथा कठिन से कठिन विषयों को भी स्पष्ट रूप से अन्य जनों को समझाने की कला में सक्षम रहेंगी।

**धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।**
**वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

आपको जीवन पर्यन्त धन का उपयोग करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। कृतज्ञता के गुण से आप सुशोभित रहेगी। यदि कोई व्यक्ति आपकी थोड़ी सी भी भलाई करेगा तो आप दिल से उसका अहसान मानेंगी। राज्यमंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी प्रिय एवं मधुर वाणी होगी जिसे सुनकर अन्य लोग प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। आप हमेशा सत्य का अनुसरण करेंगी तथा उसी के अनुसार आचरण भी करेंगी।

**धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।**
**सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।**
**मान सागरी**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

आप शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ रहेंगी। रोगग्रस्त कम ही रहेंगी। आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगी। उत्साह के साथ उसे सम्पन्न करेंगी। आपका आचरण तथा चाल चलन उत्तम रहेगा।

**धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।**
**नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप हमेशा शारीरिक तथा आत्मिक शुद्धता का पालन करेंगी। आपके दृष्टिकोण से शरीर की तरह आत्मा को शुद्ध एवं पवित्र रखा जाना चाहिए। इसके लिए आप आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी। अतः आप जो भी कार्य सम्पन्न करेंगी चंचलता को छोड़कर एकाग्रचित्त से पूर्ण करेंगी।

**रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।**
**बृहज्जातकम्**

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ रहेगा तथा आप दूसरे लोगों के दोषों के बारे में शीघ्र ही जानने वाली होंगी।

**रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।**
**जातकपरिजातः**

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका वर्ण लालिमा युक्त गौर्ण तथा गाल

स्थूल होंगे। आपकी आँखें बड़ी-बड़ी तथा मोटी होंगी। आप स्वभाव से आलसी प्रकृति की भी होंगी। उत्तम कुल में जन्मे लोगों की आप श्रद्धा पूर्वक सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी। गुरू तथा ब्राहमण वर्ग की आप अत्यन्त ही आज्ञाकारिणी होंगी। तथा उनके प्रति आपके मन में हमेशा श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति कफ तथा वात दोनों से युक्त होगी। आप बुद्धिमती होंगी। अतः सारे कार्य बुद्धिमता पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगी। आपके बाल घने तथा घुँघराले होंगे। आप दानशील प्रवृति की होंगी तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगी।

**पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।**
**कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।**
**द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।**
**सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।**
**जातकदीपिका**

आप अपने जीवन में दानशीलता की प्रवृति वाली रहेंगी तथा समस्त सुखों का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगी। शुद्धता तथा सफाई पर आप विशेष रूप से ध्यान देंगी तथा समस्त कार्यो को सम्पन्न करने में आप चतुर होंगी। आप बुद्धिमती तथा बलवती होंगी। आपके पास धनार्जन पर्याप्त मात्रा में रहेगा। अतः आपकी प्रवृति भी विलासी हो जाएगी। समस्त भौतिक सुख साधनों पर आप दिल खोलकर व्यय करेंगी। आप चेहरे से तेजस्वी परिलक्षित होगी। आपकी मित्रता अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त मित्रों से होगी जो दीर्घकाल तक चलेगी।

**भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।**
**धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।**
**मानसागरी**

आपके चेहरे तथा जानु का आकार दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग सुख तथा कष्ट से व्यतीत होंगे। तथा अन्तिम दो भाग आनन्द तथा सुख पूर्वक व्यतीत होंगे। आपकी रूचि पुरूषों के प्रति अधिक रहेगी। त्याग की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी जिसका जीवन में आप समयानुसार प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी प्रकृति क्षमाशील होगी तथा किसी व्यक्ति को उसके अपराध या गलती के लिए आप उसे क्षमा कर देंगी। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्टानाभूति होगी तथा परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा। आपकी पीठ चेहरे या बगल में तिल, मस्सा या व्रण का चिन्ह भी हो सकता है।

**पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।**
**मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।**
**त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।**
**पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।**
**फलदीपिका**

आपकी सन्तति में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी तथा आचरण एवं व्यवहार

श्रेष्ठ रहेगा। सभी आपकी प्रशंसा करेंगे। धन एवं ऐश्वर्य का उपभोग करती हुई आपकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलेगी।

**दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।**
**जातकपरिजातः**

आपका वक्षस्थल विशाल तथा विस्तृत होगा तथा प्रवृति में कामवासना की प्रधानता होगी। आपका यश चारों तरफ व्याप्त रहेगा। आप दूध का दूध तथा पानी का पानी अलग करने में चतुर होंगी। तथा शुद्धाशुद्ध या विवेक अविवेक का आपको पूर्ण ज्ञान होगा। चाल आपकी सुन्दर तथा दर्शनीय होगी।

**व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली**
**कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः**
**मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः**
**साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।**
**सारावली**

आप शनैः शनैः चलना पसन्द करेंगी तथा अपने सम्पूर्ण कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके मन में दूसरों की भलाई करने की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा इस भावना का पालन आप आजीवन करेगी। इसी प्रकार अपने सत्कार्यों तथा पुण्य कार्यों के प्रभाव से अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगी।

**स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।**
**वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।**
**जातकभरणम्**

आपका स्वरूप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर तथा दर्शनीय होगा तथा मुखाकृति थोड़ी दीर्घ होगी। आप सविलास गमन प्रिय प्रवृति की होंगी। कष्टों के सहन करने में आप सफल होंगी तथा एक अधिकार सम्पन्न समृद्ध महिला बनेंगी। आप के पेट में जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। साथ ही आप युवा तथा वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप सुशील तथा भगवान विष्णु एवं शंकर की आराधना करने वाली भी होंगी।

**कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।**
**त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।**
**पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।**
**दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।**
**बृहज्जातकम्**

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण श्रद्धा होगी। देवताओं की आप भक्ति पूर्वक पूजा करेंगी। आपके अन्दर अभिमान की भावना रहेगी। आप आजीवन धन से परिपूर्ण रहेंगी तथा धन अभाव कभी भी

आपको प्रतीत नहीं होगा। आपका हृदय दया तथा करूणा के भाव से भी युक्त रहेगा। फलतः आप दीन दुखियों की यत्न से सेवा तथा सहायता करेंगी। आप एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं की जानने वाली होंगी। ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी रूचि जागृत रहेगी। आपका शरीर कान्ति से युक्त रहेगा तथा आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली होंगी।

**वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।**
**वृहत्पाराशर होराशास्त्र**

आप जीवन पर्यन्त मान सम्मान तथा धन से युक्त रहेंगी। साथ ही आप एक अच्छी निशानेबाज भी बन सकती हैं। आपके शरीर का वर्ण गौर वर्ण होगा। आप किसी नगर की सम्माननीया पदाधिकारी या नेता हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त आपके नेत्र आकार में बड़े-बड़े होंगे।

**देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।**
**प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।**
**जातकाभरणम्**

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आपका जन्म सर्प योनि में होने से कभी कभी आपके अन्दर क्रोध की मात्रा बहुत अधिक होगी। क्रोधावस्था में आपको स्वयं के भले बुरे का ज्ञान नहीं रहेगा। आप चंचल प्रकृति की होंगी तथा जीभ आपकी अत्यन्त ही स्वाद लोलुप होगी। अर्थात् आपको चटपटी चींजें खाने का शौक अधिक रहेगा।

**दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।**
**चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।**
**मानसागरी**

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी

आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, शकुनि करण, शनिवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होते हैं। अतः आपको चाहिए कि 15 नवम्वर से 14 दिसम्वर के मध्य हस्त नक्षत्र सुकर्मा योग, शकुनि करण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिमार्ण, क्रय विक्रय लेन देन आदि इस समय पर न करें अन्यथा आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही अनावश्यक हानि से बचने के लिए शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें तथा इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

जब समय आपके अनुकूल न चल रहा हो जैसे व्यापार में हानि हो रही हो नौकरी

नहीं लग रही हो या उन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो एसे समय में आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के व्रत करने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, कपूर, श्वेत पुष्पादि पदार्थो का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप करने या करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकती हैं।

**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**
**मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।**

**Pulak Sagarm**
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com